

हम वक्र लोक जायव ॥ ॥ वक्रादवर्चि ॥ ॥ यका ॥ वक्रा हम वक्र लोक जाः
यव ॥ ॥ द्विका ॥ वक्रा हम भीष्ट जायव ॥ ॥ विष्णु हंणी प्रादि दवता लोक स्व
न श्रुत्यक्त जायव न हव ॥ सर्वे तानाय ॥ अद ॥ विष्णु दि प्रविर्चि ॥ ॥ तानकादाः
दि तीर्थी ॥ ॥ यका ॥ तान ह लोक मन्दिन जायव वलू ॥ सर्वे दान वन्द विजय कर
॥ ॥ द्विका ॥ सर्वे ह दान वन्द सख न विजय कर ॥ तान लोक वलू ॥ ॥ तान ह प्री
तादि लोक श्रयना मन्दिन श्रयय कर ता ह दान वन्द विजय कर ॥ सर्वे दान वन्द
श्रय ॥ विष्णु म ॥ ॥ ता ह प्रियादि लोक हम वक्रा कडा तय पस्या कर जायव
मन्दिन मन्दिन हिन ह ॥ सर्वे दान वन्द विजय कर ॥ हम ना लव लेक यत्तम ॥ ॥
न ह काना ला क विष्णु माली वक्र कडा तय पस्या कर जायव वलू ॥ उलो दन

٢٤٣

॥ तानकाकादिनिस्त्रा ॥ ॥ राजनिर्येज ॥

यदनुज जायवचतु कमतुज थभ रुजन क विरुज ॥ भयू ३ ॥

॥ प्रकाशात् नरु कनालाद विद्युन्मालीव श्रुतं कदाचिदप्युक्तं कथं नयजं नवचलं ॥ ८ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

महाकविष्मातीचल ॥ ॥ तावहुकराहाकविष्मातीचलः कश्चापकचलः

कृष्णकविप्रामकयनहव॥७॥ दानवन्द्यश्रवण॥ विप्राम॥ ॥ तागकन्याः ॥ १०

कविमुन्मालीखभस्त्रानादिकनव॥उल्लोदानवत्तुश्रुत॥ ॥स्त्रानादियाच॥ ॥

मानहकनालाक विष्णुमाली ग्रीष्मकाल पंचतयावर्षाकाले निवाव नू नहि मातका प्रया

श्वनजीकजलं नहि वृक्षाकश्चानाधनाकनव ॥ इति सूक्तानां श्रवणं ॥ ॥ सूक्तपुति